रमज़ान के आख़री दस दिनों की दुआएं

आख़िरी दस दिनों की दुआऐं :- मालूम होना चाहिए कि रमज़ान की आख़िरी दसों शबों में यह दुआ पढ़े :-

"अऊज़ो बे जलाले वजहेकल करीमे अन यनक़ज़ेया अन्नी शहरो रमाज़ाना औ यतलोअल फजरो मिन लैलाती हाज़ेही व लका केबाली ज़नबुन औ तबेआतुन तोअज़्ज़ेबोनी अलैह"

{अर्थात् मैं पनाह मागता हूँ तेरी बुज़ुर्ग और मरतबे वाली ज़ात के तवस्सुत (हवाले) से इस बात से कि रमज़ान का महीना इस तरह गुज़र जाये मुझसे या यह कि ज़ाहिर हो इस रात की सहर इस हालत में कि मेरे ऊपर कोई गुनाह या ग़लती हो कि जिस पर तू मुझे सज़ा दे।}

सत्ताईसवीं शब को भी गुस्ल सुन्नत है और इमाम ज़ैन-उल-आबिदीन (अ॰) इस शब में पूरी रात यह दुआ पढ़ते थे :-

"अल्लाहुम्मर ज़ुक़नित तजाफी अन दारिल ग़ुरूरे वल इनाबाता इला दारिल ख़ुलूदे वल इस्तेअदादा लिल मौते क़ब्ला हुलूलिल फौत"

{अर्थात् खुदावन्दा अता कर मुझको जज़बा चेहरा फेरने का धोका देने वाली दुनिया से और लौ लगाने का आख़िरत की तरफ और मौत के लिए तैय्यार होने का इससे पहले कि (मौत का) वक़्त आ जाये।}

उन्तीसवीं तारीख और आख़िरी शब भी ग़ुस्ल सुन्नत है और ज़ियारत-ए-इमाम हुसैन (अ॰) पढ़ने का बहुत सवाब है।

इमाम जअफर सादिक़ (अ॰) से मनकूल है कि रमज़ान के महीने की आख़िरी शब को यह दुआ पढ़े :-

"अल्लाहुम्मा ला तजअलहो आख़ेरल अहदे मिन सेयामी लेशहरे रमाज़ाना व अऊज़ोबेका अय्यतलआ फजरो हाज़ेहिल लैलाते इल्ला व क़द ग़फरताली"

{अर्थात् खुदावन्दा क़रार न दे इसको आख़िरी मौक़ा मेरे रोज़े रखने का रमज़ान के महीने में और पनाह मॉगता हूँ मैं तुझसे इस बात से कि तुलूअ करे सुबह इस शब

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990

की मगर यह कि मुझे तूने बख़्श दिया हो।}

इसी आख़िरी शब में सूरः-ए-अनआम, कहफ़ और यासीन पढ़ने का भी सवाब है। इसके अलावा सौ बार कहे *"अस्तग़फेरूल्लाहा व अतूबो इलैह"*।

यह भी मालूम होना चाहिए कि रमज़ान के महीने के आखिरी जुमअे (जुमआतुल विदाअ) में दुआ-ए-विदाअ पढ़े और वह यह है :-

"अल्लाहुम्मा ला तजअलहो आखेरल अहदे मिन सेयामेना इय्याहो फाइन जअलताहू फजअलनी मरहूमन वला तजअलनी महरूमा"

{अर्थात् खुदावन्दा न क़रार दे इस मौक़े को आख़िरी मौक़ा हमारे रोज़ः रखने का इस महीने में, अगर तू ने ऐसा ही फैसला कर लिया है, तो मुझ पर रहमत क़रार देना और अपनी रहमत से महरूम न क़रार देना।}

इसके अलावा आख़िरी दस शबों की अलग-अलग दुआऐं भी बतायी गयी हैं। जिनमें हर दिन की दुआ का आखिरी टुकड़ा यह है :-

"या अल्लाहो या अल्लाहो या अल्लाह लकल अस्माउल हुसना वल अमसालुल उलया वल किब्रेयाओ वल आलाओ अस्अलोका अन तोसल्लेया अला मुहम्मदिंव व आले मुहम्मद व अन तजअला इसमी फी हाज़ेहिल लैलाते फिस सोआदाऐ व रूही मअशशोहादाअे व एहसानी फी अिल्लीयीना व इसाआती मग़फूरः व अन तहाबा ली यक़ीनन तोबाशेरो बेही क़ल्बी व ईमानन युज़हेबुशशक्का अन्नी व तुरज़ेयानी बेमा कसमताली व आतेना फिद दुनिया हसानातवं व फिल आखेराते हसानः व क़ेना अज़ाबन नारिल हरीक़े वर जुकनी फीहा ज़िकराका व शुकराका वर रग़बाता इलैका वल इनाबाता वत्तौबाता वत्तौफीक़ा लेमा वफ़्फ़कतालहू मुहम्मदंव व आला मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व अलैहिम अजमअीन"

{अर्थात् ए खुदा ए खुदा ए खुदा तेरे ही लिए अच्छे-अच्छे नाम और बुलन्द व बाला मिसालें और बरतारी और बख़्शिशें लाएक व सज़ावार हैं, मैं तुझसे सवाल करता हूँ कि तू मुहम्मद व आल-ए-मुहम्मद अलैहिमुस्सलाम पर रहमत नाज़िल फर्मा और इसी शब मेरा नाम नेकी करने वालों में दर्ज फर्मा और मेरी रूह को शहीदों के साथ क़रार दे और मेरे अच्छे अमल को ऊँचे मुकाम (जगह) पर पहुचाँ और मेरे बुरे कामों की मग़फरत (माफी) हो जाये और यह कि तू मुझे ऐसा ठोस यक़ीन अता फर्मा जो मेरे क़ल्ब (दिल) से मिल जाये और ऐसा मज़बूत ईमान जो मुझसे शक को दूर कर दे और मुझे उस हिस्से पर राज़ी कर दे जो तूने मेरे लिए तय किया है और हम को दुनिया और आख़िरत में खैर व खूबी अता फर्मा और हमें जहन्नम की आग के दर्दनाक अज़ाब से बचा और मुझे इस शब में

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990

अपना ज़िक्र अपना शुक्र और अपनी तरफ रग़बत और क़ल्ब का लगाव और तौबः और उन तमाम अमल की तौफीक़ अता फर्मा जिन के अदा करने की तौफीक़ मुहम्मद (स•) व आल-ए-मुहम्मद (अ•) को अता फर्मायी। अल्लाह की रहमत हो रसूल-ए-खुदा (स•) और उनके तमाम अहल-ए-बैत-ए-ताहेरीन (अ•) पर।}

उपर्युक्त दुआ के आख़िरी टुकड़े के साथ आख़िरी दस शबों की अलग-अलग दुआ यह है।

इक्कीसवीं शब :- *"या मूलेजल लैले फिन्नहारे व मूलेजन नहारे फिल लैले व मुख़रेजल हय्ये मेनल मय्यिते व मुखरेजल मय्यिते मेनल हय्ये या राज़ेका मय्यशाओ बेग़ैरे हिसाब या अल्लाहो या रहमानो या अल्लाहो या रहीम"* इसके बाद ऊपर लिखा आखिरी टुकड़ा पढें।

{अर्थात् ए रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करने वाले और ए ज़िन्दः को मुर्दः से और मुर्दः को ज़िन्दः से निकालने वाले ए जिसे चाहे बे हिसाब रोज़ी देने वाले ए खुदा ए महरबान ए अल्लाह ए सबसे ज़्यादः रहम करने वाले।}

बाईसवीं शब :- *"या सालेख़न्नहारे मेनल लैले फाइज़ा नहनो मुज़लेमून व मुजरे यशशमसे ले मुस्तकर्रेलहा बे तक़दीरेका या अज़ीज़ो या अलीमो या मो क़दवेरल क़मारे मनाज़ेला हत्ता आदा कल अुरजूनिल क़दीमे या नूरा कुल्ले नूरिन व मुनतहा कुल्ले रग़बातिन व वलीया कुल्ले नेअमातिन या अल्लाहो या रहमानो या अल्लाहो या क़ुदूसो या अहादो या वाहेदो या फर्दो"* इसके बाद ऊपर लिखा आखिरी टुकड़ा पढ़ें।

{अर्थात् ए दिन को रात से खैंच कर अलग करने वाले जिससे हम पर तारीकी (अंधेरे) का ग़लबः हो जाता है और जारी करने वाले आफताब (सूरज) के उसके क़रार की जगह में अपनी करार दाद के साथ ए इज़्ज़त वाले ए बाखबर और ए चाँद के लिए मंज़िलों को तय करने वाले यहाँ तक कि वह फिर ज़ाहिर हो। कजी (टेढ़ेपन) के साथ पुरानी शाख की तरह से ए हर रौशनी के रौशन करने वाले और हर कस्द (इरादे) के आख़िरी मक़सद और मालिक हर नेअमत के ए अल्लाह ए बड़े रहम वाले ए अल्लाह ए बुराईयों से पाक ए यकता ए एक ए अकेले।}

तेईसवीं शब :- *"या रब्बा लैलातिल क़द्रे व जाअेलाहा ख़ैरन मिन अलफे शहर व रब्बल लैले वन्नहार वलजेबाले वल बेहार वज़्ज़ुल्मे वल अनवार वल अर्ज़े वस्समाअ या बारेओ या मुसव्वेरो या हन्नानो या मन्नानो या अल्लाहो या रहमानो या अल्लाहो या क़य्यूमो या अल्लाहो या बदीओ"* (आख़िरी टुकड़ा पढ़े)

{अर्थात् ए शब-ए-क़द्र के मालिक और ए इस रात को हज़ार महीनों से बेहतर

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990

क़रार देने वाले ए रात और दिन और पहाड़ों और दरयाओं और अंधेरों और रौशनीयों और ज़मीन व आसमान के मालिक ए पैदा करने वाले ए सूरत बनाने वाले ए महरबानी करने वाले ए एहसान करने वाले ए अल्लाह ए अल्लाह ए बड़े रहीम ए अल्लाह ए बाक़ी रहने वाले ए अल्लाह ए अनोखी ईजाद करने वाले।)

चौबीसवीं शब :- ***"या फालेकल इसबाहे व जाअेलल लैले सकाना वश शमसे वल क़मारे हुस्बाना या अज़ीज़ो या अलीमो या ज़ल मन्ने वत तौले वल कुव्वते वल हौले वल फज़्ले वल इनआमे या ज़ल जलाले वल इकराम या अल्लाहो या रहमानो या अल्लाहो या फर्दो या वितरो या अल्लाहो या ज़ाहेरो या बातेनो या हय्यो ला इलाहा इल्ला अन्ता"***

(फिर आख़िरी टुकड़ा पढ़े)

(अर्थात् ए सुबह की पौ फाड़ने वाले और क़रार देने वाले रात को आराम व सुकून का वक़्त और सूरज और चाँद को हिसाब के साथ जारी करने वाले ए इज़्ज़त वाले ए बाखबर ए एहसान और बख़्शिश और कुव्वत और ताक़त और नेअमत और अता के मालिक ए जलालत और बुज़ुर्गी रखने वाले ए अल्लाह ए बड़े रहम वाले ए अल्लाह ए अकेले ए बे मिस्ल व बेनज़ीर ए अल्लाह ए ज़ाहिर ए बातिन ए ज़िन्दः नहीं है कोई मअ़बूद सिवाये तेरे।)

पच्चीसवीं शब :- ***"या जाअेलल लैले लिबासा वन्नहारे मआशा वलअर्ज़े मेहादा वल जेबाले औतादा या अल्लाहो या क़ाहेरो या अल्लाहो या जब्बारो या अल्लाहो या समीओ या अल्लाहो या क़रीबो या अल्लाहों या मोजीबो"*** (आख़िरी टुकड़ा पढ़ें)

{अर्थात् ए रात को पर्दः पोश क़रार देने वाले और दिन को रोज़ी की तलाश का मौक़ा और ज़मीन को बिछौना और पहाड़ों को मेख़ों (खूंटों) की तरह ए अल्लाह ए ज़बरदस्त ए अल्लाह ए ताक़त वाले ए अल्लाह ए सुनने वाले ए अल्लाह ए क़रीब ए दुआओं के क़ुबूल करने वाले)

छब्बीसवीं शब :- ***"या जाअेलल लैले वन्नहारे आयातैन या मनमहा आयातल लैल व जआला आयातन नहारे मुबसेरः लेतबतगू फज़्लन मिनहो व रिज़्वाना या मुफस्सेला कुल्ले शैइन तफसीला या अल्लाहो या माजेदो या वहहाबो या अल्लाहो या जवादो"***(आख़िरी टुकड़ा पढ़ें)

{अर्थात् ए दिन और रात को दो निशानीयाँ क़रार देने वाले ए वह जिसने मिटाया रात की निशानी को और दिन की निशानी को रौशन करार दिया ताकि लोग इससे फायेदे और मर्ज़ी के मुताबिक मतलब हासिल करें ए अलग-अलग क़रार देने वाले हर

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990

चीज़ को पूरे तौर पर ए अल्लाह ए साहिब-ए-बुजुर्गी ए अता करने वाले ए अल्लाह ए सख़ी)

सत्ताईसवीं शब :- "*या माद दज़ ज़िल्ले वलौ शेएता जअलताहू साकेना व जअल तश शमसा अलैहे दलीला सुम्मा कबज़्ताहू इलैका कबज़्य यसीरा या ज़ल हौले वत्तौल वल किबरियाऐ वल आलाऐ लाइलाहा इल्ला अन्ता आलेमुल ग़ैबे वश शहादातिर रहमानुर रहीम ला इलाहा इल्ला अन्ता या कुददूसो या सलामो या मोमेनो या मुहैमेनो या अज़ीज़ो या जब्बारो या मुता कब्बेरो या अल्लाहो या ख़ालेको या बारेओ या मुसव्वेरो*" (आख़िरी टुकड़ा पढ़े।)

{अर्थात् ए हर चीज़ के साये को फैलाने वाले और अगर तू चाहता तो उसे बाकी रखता और सूरज को तूने साया फैलने का ज़रिया बनाया फिर धीरे-धीरे उसको सुकेड़ दिया ए कुव्वत और ताक़त और बुज़ुर्गी और नेअमतों वाले कोई भी तेरे सिवा मअबूद नहीं है तू ही हाज़िर और ग़ायब का जानने वाला है बड़ा रहम वाला और फायदः पहुचाँने वाला है तेरे सिवा कोई खुदा नहीं ए पाक ए सलामती अता करने वाले ए अम्न व इत्मिनान देने वाले ए हिफाज़त करने वाले ए अिज़्ज़त वाले ए ताकत वाले ए बुज़ुर्गी वाले ए अल्लाह ए ख़ालिक ए पैदा करने वाले ए सूरत बनाने वाले।}

अठठाईसवीं शब :- "*या खाज़ेनल लैले फिल हवाए या खाज़ेनन नूरे फिस्समाअए व माने अस्समाअए अन तक़ाआ अलल अर्ज़े इल्ला बे इज़्नेही व हाबेसाहुमा अन तज़ूला या अलीमो या अज़ीमो या ग़फूरो या दाऐमो या अल्लाहो या वारेसो या बाअेस मन फिल कुबूर*" (आख़िरी टुकड़ा पढ़ें)

{अर्थात् ए रखवाली करने वाले रात के अंधेरे में और ए जमा करने वाले आसमान में नूर के और ए रोकथाम करने वाले आसमान की ज़मीन पर गिर पड़ने से लेकिन तू ही चाहे और रोकने वाले उन दोनों (ज़मीन और आसमान) के इस बात से कि वह हट जायें (टकरा न जायें) अपनी जगह से ए जानने वाले ए बुज़ुर्ग ए बख़्शने वाले ए हमेशा रहने वाले ए अल्लाह ए पूरी दुनिया के बाद बाक़ी और ए लोगों को क़ब्रों से उठाने वाले।}

उन्तीसवीं शब :- "*या मुकव्वेरल लैले अलन नहार व मुकव्वेरन नहारे अलल लैल या अलीमो या हकीमो या रब्बल अरबाब व सय्येदस सादात ला इलाहा इल्ला अन्ता या मन होवा अक़राबो इलैहे मिन हब्लिल वरीद*" (आख़िरी टुकड़ा पढ़ें)

{अर्थात् ए रात को दिन पर लपेटने वाले और दिन को रात पर लपेटने वाले ए जानने वाले ए मसलहत के मुताबिक़ काम करने वाले ए मालिकों के मालिक ए सरदारों

के सरदार तेरे सिवा कोई मअबूद (खुदा) बरहक़ नहीं है ए वह जो मुझसे रग-ए-गर्दन से ज़्यादः क़रीब है।}

तीसवीं शब :- *"अल्हम्दो लिल्लाहे ला शरीका लहू अल्हम्दो लिल्लाहे कमा यनबग़ी लेकरामा वज्हेही व अिज़्ज़े जलालेह व कमा हुवा अहलोह या क़ुददूसो या नूरो या नूरल क़ुदसे या सुब्बूहो या मुन्ताहत तसबीह या रहमानो या फाअेलर रहमः या अल्लाहो या अल्लाहो या अलीमो या कबीरो या अल्लाहो या लतीफो या जलीलो या अल्लाहो या अल्लाहो या समीओ या बसीरो"* (ऊपर लिखा आख़िरी टुकड़ा पढ़ें।)

{अर्थात् तअरीफ अल्लाह के लिए है उसके लिए शरीक नहीं तअरीफ अल्लाह के लिए जैसा कि मुनासिब (सज़ावार) है उसके सिफात (खूबीयों) की बुज़ुर्गी और उसके जलाल की अिज़्ज़त के लिए और जिसका वह हक़दार (मुसतहक़) है ए पाक व पाकीज़ा हस्ती ए नूर ए आलम-ए-क़ुदस के रौशन करने वाले ए अैबों और कमीयों से पाक ज़ात वाले ए तसबीह के आख़िरी मरकज़ ए बड़े रहम वाले ए रहम के पैदा करने वाले ए अल्लाह ए जानने वाले ए बुज़ुर्ग ए अल्लाह ए लुत्फ (व करम) करने वाले ए बुज़ुर्ग मर्तबः ए अल्लाह ए अल्लाह ए सुनने वाले ए देखने वाले।}

अनुमति : अब्बास बुक एजेंसी द्वारा प्रकाशित "तोहफतुल-अवाम" से लिया गया ! अपनी किताबों को खरीदने के लिए संपर्क करें abbasbookagency@yahoo.com / अथवा एसेमेस भेजें : +91-941-510-2990